Lecture Series :- 93
Date :- 30/07/2020

Topic :- Theory of suicide Presented by Emile Durkheim

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक Le Suicide में बहुत से आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट किया कि आत्महत्या किसी व्यक्तिगत कारण का परिणाम नहीं होती बल्कि यह एक सामाजिक तथ्य है। इसे स्पष्ट करते हुए दुर्खीम का कथन है कि जिन विद्वानों ने आत्महत्या को वंशानुगत दोष, निर्धनता, निराशा, मानसिक असंतुलन अथवा जलवायु आदि के आधार पर स्पष्ट किया है, वे विद्वान आत्महत्या को एक वैयक्तिक घटना मानने की गलती कर बैठते हैं। वास्तविकता यह है कि आत्महत्या का संबंध कुछ विशेष सामाजिक दशाओं एवं उनसे किए गए वैयक्तिक अनुकूलन की मात्रा से होता है। दुर्खीम के शब्दों में आत्महत्या का सामाजिक पर्यावरण की विभिन्न दशाओं के बीच का संबंध उतना ही अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट होता है जितना कि जैविकीय और मौतिक दशाएँ आत्महत्या के साथ एक अनिश्चित और अस्पष्ट संबंध को स्पष्ट करती है।

अपने इस कथन के आधार पर दुर्खीम ने यह स्पष्ट किया कि एक असंतुलित व्यक्तित्व के लिए यह

आवश्यक होता है कि सामाजिक दशाओं तथा सामूहिक चेतना का व्यक्ति के जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव स्पष्ट हो। इसके विपरीत, जब व्यक्ति के जीवन पर समूह के नियंत्रण की आवश्यकता से अधिक वृद्धि अथवा कमी होने लगती है तो सामाजिक दशाएँ व्यक्ति को असामान्य रूप से प्रभावित करना आरम्भ कर देती है। यही दशा आत्महत्याओं का कारण होती है। दुर्खीम ने अपने द्वारा एकत्रित आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट किया कि स्त्रियों की तुलना में पुरुष अधिक आत्महत्या करते हैं, कम आयु के लोगों की अपेक्षा अधिक आयु के लोगों में आत्महत्या की दर अधिक पायी जाती है, सामान्य जनता की तुलना में सैनिक लोग अधिक आत्महत्याएँ करते हैं, अविवाहित और सुखी पारिवारिक जीवन से वंचित लोगों में उन व्यक्तियों की तुलना में आत्महत्या की दर अधिक होती है जो विवाहित अथवा सुखी पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं। इसी प्रकार कैथोलिक धर्म को मानने वालों की तुलना में प्रोटेस्टेंट धर्म को मानने वाले लोग अधिक आत्महत्याएँ करते हैं। प्रोटेस्टेंट धर्म को मानने वालों में आत्महत्या की दर इसलिए अधिक होती है कि उनका धर्म व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अधिक बल देने के कारण व्यक्तियों के व्यवहार पर इतना नियंत्रण स्थापित नहीं कर पाता कि वे पूर्णतया एक नैतिक समुदाय में संयुक्त हो सकें। इसका तात्पर्य है कि धार्मिक विश्वास तथा धार्मिक आधार अनिवार्य रूप से आत्महत्या पर नियंत्रण नहीं लगाते। एक विशेष धर्म अपने आचारों के द्वारा वैयक्तिक जीवन को जितना अधिक संगठित कर लेता है, उसके मानने वालों में आत्महत्या की दर उतनी ही कम हो जाती है। इससे पुनः यह स्पष्ट होता है कि आत्महत्या की घटनाओं को सामाजिक आधार पर ही समझा जा सकता है। इस लेख

इस लेख में एक प्रश्न यह उठता है कि यदि सामाजिक दशाएँ ही आत्महत्या का कारण हैं तो समान

Scanned with CamScanner

सामाजिक दशाओं में रहने वाले लोगों में आत्महत्या की घटनाएं एक-दूसरे से भिन्न क्यों होती हैं? इसे स्पष्ट करते हुए दुर्खीम का कथन है कि आत्महत्या को प्रेरणा देने वाली दशाएं प्रत्येक समाज में क्रियाशील रहती हैं लेकिन विभिन्न व्यक्तियों पर उनका प्रभाव समान नहीं होता है। इसका तात्पर्य है कि एक विशेष दशा को कुछ लोग बहुत सामान्य समझकर उसे यों ही छोड़ देते हैं अथवा उसके प्रति पूरी तरह उदासीन बने रहते हैं। दूसरी ओर कुछ व्यक्ति ऐसे भी हो सकते हैं जो उसी दशा के उत्पन्न होने पर या तो पूरी तरह से टूट जाते हैं अथवा अपने कर्तव्य को इस सीमा तक पूरा करने के लिए तैयार हो जाते हैं कि उन्हें अपने जीवन की भी चिंता नहीं रहती है। इसका तात्पर्य है कि आत्महत्या को प्रेरणा देने वाली विभिन्न सामाजिक दशाओं के प्रति जो व्यक्ति जितना अधिक लगाव महसूस करते हैं, उनमें आत्महत्या की ओर बढ़ जाने की संभावना उतनी ही अधिक हो जाती है। इसी आधार पर दुर्खीम ने लिखा है, "यह निश्चित प्रतीत होता है कि कोई भी सामाजिक भावना व्यक्तियों को तब तक प्रभावित नहीं कर सकती जब तक वे उसके प्रति उदासीन बने रहें।"